Scanned by CamScanner

ओडिशा

रेमुना-खीर-चोरा गोपीनाथ

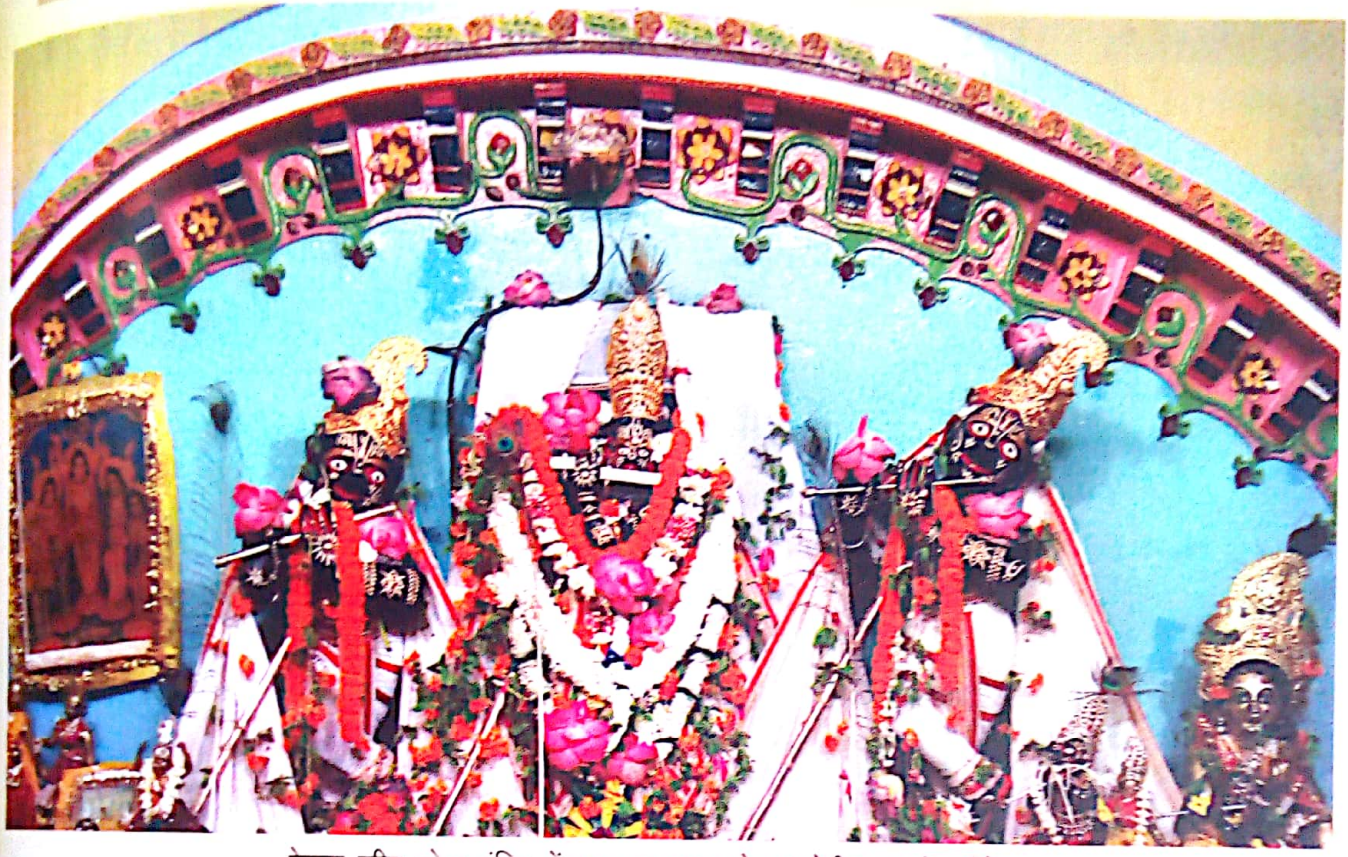

रेमुना खीर चोरा मंदिर में भगवान मदन मोहन गोपीनाथ की मूर्ति

ओडिशा प्रदेश के बालेस्वर जिले में स्थित खीर चोरा गोपीनाथ वैष्णव संस्कृति की एक धरोहर है। जहां भगवान गोपी नाथ गोविंदा और श्री मदन मोहन, काले पत्थर से बने है। श्री गोपी नाथ मुस्कुराते हुए बस खड़े हैं। किंवदन्ती में सुनने को मिलता है कि त्रेता युग में भगवान मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम जी ने चित्रकूट वनवास के कुछ दिन व्यतीत किए थे। कहा जाता है कि वनवास के उस समय में एक बार सीता माता ने श्री राम जी से उनके अगले अवतारी रूप को देखने की जिज्ञासा जताई तो भगवान मदनमोहन प्रभू का स्वरूप दिखाई दिया। अपने कौतूहलवश जब माता सीता ने उस प्रतिमा को उसी धनुष से छू लिया तो अचानक से प्रतिमा से रक्त का प्रवाह हुआ और प्रतिमा सजीव हो उठी, उसी दिन से वहां माता सीता के द्वारा स्थापित प्रतिमा कई वर्ष तक पूजित हुई। 'रेमुना धाम' यह नाम - मंदिर में इष्टदेव श्री राधा खीर चोर गोपीनाथ नाम पर है।

इतिहास

गंग वंशी राजा नरसिंह देव ने पुत्र प्राप्ति हेतु चित्रकूट में कठोर तप किया था। एक रात उन्होंने स्वप्न में प्रभू मदन गोपाल को यह कहते हुए देखा कि चित्रकूट से मेरी प्रतिमा को लेकर अपने राज्य

Scanned by CamScanner

के किसी सुरम्य और एकान्त स्थान पर स्थापित करने से ही उनके पाप मोचन होंगे तथा सुपुत्र की प्राप्ति का मनोवांछित फल प्राप्त होगा। अगले ही दिन राजा ने मंदिर के प्रधान पुजारी से मदन गोपाल की एक प्रतिमा देने की याचना की। पुजारी ने भी सहर्ष उनकी याचना को स्वीकार करते हुए प्रभु की प्रतिमा दिलवा दी। राजा नरसिंह देव ने रेमूना में ग्वालों की जनबस्ती के निकट गौड़दंडा नामक प्रांत में स्थापित किया।

वैश्णरवाचार्य राघबेंद्र नीलांचल में श्रीक्षेत्र पुरी जाने के रास्ते यहीं रुके हुए थे उन्होंने जब प्रभू मदन गोपाल की खीर से भोग लगाने के बारे में सोचा तो प्रभू मदन गोपाल खुद दूध चुरा के वैश्णैवाचार्य राघबेंद्र को प्रदान किया था इसीलिए उनका नाम खीर चोरा गोपीनाथ के रूप में प्रसिद्ध हुआ।

लगभग 500 वर्ष पहले माघवेन्द्र पुरी चंदन लाने के लिए वृंदावन से पुरी जा रहे थे। कुछ दिन नवद्वीप में ठहरने के पश्चात उन्होंने पुरी उत्कल जाने के लिए यात्रा आरंभ की और रेमुना आ पहुंचे जहां गोपीनाथ अवस्थित थे। प्रभु की छवि देखकर माघवेन्दपुरी अभिभूत हो गए कि मंत्रोच्चार करते हुए नृत्य करने लगे। जब थक गए तो उनके मन में आया कि संध्या में प्रभु गोपीनाथ को किस खाद्य पदार्थ का भोग लगाया जाए, किसी से पूछ लिया जाए और उसी प्रकार का पदार्थ तैयार कराया जाए। उन्होंने एक ब्राहमण से पूछा तो उन्होंने बताया कि प्रभु को संध्या समय मिट्टी के बारह बर्तनों में मीठे चावल का भोग लगाया जाता है। माघवेन्द्र जी के मन में आया कि कहीं प्रभु नाराज न हो जाएं, इसलिए क्यों न इसमें अमृत यानि दूध के साथ कुछ सूखे मेवा भी मिला दिए जाए और उन्होंने मीठे चावल के साथ दूध और मेवे मिला दिए और मिट्टी के बारह बर्तनों में यह प्रसाद के प्रभु के सामने अर्पित किया। जब माघवेन्द्र पुरी मंत्रोच्चार कर पूजा कर रहे थे तभी एक पात्र कम हो गया। एक पात्र कम हो जाने से वह बहुत दुखी हुए। स्वयं को दोषी मानते हुए प्रभु के सामने जाकर चरण पकड़ कर क्षमायाचना करते हुए रोने लगे। अचानक उन्हें लगा कि वह पात्र प्रभु के वस्त्रों में रखा था। उन्होंने देखा कि पात्र खाली था, ऐसा लगा जैसे किसी ने खीर खाकर पात्र वहां छुपा दिया हो। पुरी ने प्रभु के मुख की ओर देखा तो लगा कि प्रभु मुस्करा रहे हैं। उसी रात स्वप्न में प्रभु ने कहा मैंने तुम्हारी खीर खाई थी, बड़ी स्वादिष्ट थी। प्रातः उन्होंने सभी को यह बात बताई तो पुजारी ने कहा अच्छा तो भगवान ने तुम्हारा खीर का पात्र चुरा लिया था। तुम बड़े सौभाग्यशाली हो। बस उसी दिन से भगवान गोपीनाथ को लोग खीर-चोरा कहने लगे और इसीलिए उनका नाम 'खीरचोरा' यानि खीर चुराने वाले गोपीनाथ के रूप में प्रसिद्ध हुआ।

अब तक वहां के भक्तों ने ऐसा स्वादिष्ट प्रसाद नहीं पाया था। उन्हें उसका स्वाद अमृत की तरह लगा अतः इसे 'अमृत केलि' नाम दे दिया। इसलिए इस मीठे को पूरे विश्व में गोपीनाथ खीर का नाम दिया गया। विश्व में किसी भी मंदिर में ऐसा प्रसाद न तो बनाया जाता है और न ही भगवान को भोग लगाया जाता है।

Scanned by CamScanner

मंदिर सुबह के 4.00 बजे खुलता है। 5.00 बजे मंगल आरती के बाद, प्रातः प्रसाद दिया जाता है। दिन में भी पूजा होती है। दोपहर के 1.00 बजे अन्न प्रसाद होता है। फिर सायं चार बजे तक मंदिर बंद रहता है। रात में बाल भोग तथा अन्न प्रसाद भी होता है। साल भर रथ यात्रा, कृष्ण जनमाष्टमी, मकर संक्रांति, व्यंजन द्वादशी, गिरि गोवर्धन पूजा, बैसाख पूर्णिमा जैसे कई तरह के त्यौहार मनाए जाते हैं। यहां मिलने वाले सभी तरह के प्रसादों में 'अमृत-केली' यानि खीर सबसे मशहूर है। रोजमर्रा की जिंदगी से अलग दूर रेमुना का हरा-भरा स्वच्छ वातावरण यहां पर आने वाले पर्यटकों को धरती पर भगवान के विश्वास का सुनहरा एहसास करवाता है।

पुस्तकालयाध्यक्ष
होटल प्रबंधन खानपान प्रौद्योगिकी तथा अनुप्रयुक्त पोषाहार संस्थान,
वीर सुरेन्द्र साईं नगर, भुबनेश्वर, ओडीशा

'कैसे पहुंचे : बालेश्वर रेलवे स्टेशन नई दिल्ली, कोलकाता, गुवाहाटी, चेन्नई और भुबनेश्वर आदि महानगरों से रेल मार्ग से सीधे जुड़ा है। निकटतम हवाई अड्डा भुबनेश्वर है जो लगभग 250 किलोमीटर की दूरी पर है। आसपास के महानगरों जैसे कोलकाता, भुबनेश्वर आदि से बस सेवाएं भी उपलब्ध हैं।
''**कहां ठहरें** : बालेश्वर शहर में हर प्रकार के होटल उपलब्ध हैं।

हिन्दी हमारी संस्कृति, हिन्दी हमारी पहचान, राजभाषा है हमारी, इसमें समाया हिन्दुस्तान।
करें काम हिन्दी में और बढ़ाएं स्वाभिमान, अपनाएं इसे हृदय से और दें इसे सम्मान।।
- रेखा द्विवेदी

Scanned by CamScanner